International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 80-82

आधुनिक समय में वेदों का महत्त्व

डॉ. दोलामणिः आर्यः

सहायक–प्राध्यापक, लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

1. प्रस्तावना

वैदिक वाङ्मय विश्व का प्राचीनतम वाङ्मय है। वाङ्मय अत्यन्त प्राचीन होते हुए भी अपना अनुपम वैशिष्ट्य रखता है। यह समस्त सत्यज्ञान की अप्रतिमराशि एवं विश्व के ग्रन्थागार में सर्वप्राचीन ग्रन्थ है। वह भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता का प्राण है। मानव सभ्यता के विकास के अति प्राचीन काल से ही वेद की शिक्षाएँ मानव मात्र को असत् से सत् की ओर प्रेरित करती रही है। वैदिक–मन्दाकिनी की सुधाधारा में अवगाहन कर हृदय को परम शान्ति प्राप्त होती है। यह युगों में प्रवाहित होने वाली वह पवित्र अक्षुण्ण ज्ञान–धारा है जो कि अनेक संक्रमण–व्युत्क्रमणों को पार करती हुई आज भी अपने अनवद्यवपु के द्वारा बहती चली आ रही है। यह भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व के मानव हृदय का प्रतिनिधित्व करने वाली, परम शान्ति प्रदान करने वाली वह दिव्य ज्योति है जिससे आलोकित मानव को अपने कर्मपथ का, पाप–पुण्य का, कर्तव्य अकर्तव्य का, सत्य असत्य का, धर्म और अधर्म का ज्ञान होता है। भारत तथा भारतीयता से स्नेह रखने वाले सुधीजन जिसे सम्मान की दृष्टि से देखते हुए जिसके उपदेश पीयूष का पान कर उस दिव्य स्वर्गस्थ पीयूष की कामना नहीं करते, उस विश्व विश्रुत भगवती श्रुति की उपासना से ही भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन आदि का तात्त्विक अनुशीलन किया जा सकता है। भारत की समस्त मौलिक ज्ञान विज्ञान की निधि इसी में विद्यमान है। भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, सभ्यता ललित साहित्य, विधिशास्त्र, अर्थशास्त्र, स्थापत्य, गणित, फलित, विज्ञान, इतिहास कलाएँ आदि सबका आदि स्रोत वैदिक वाङ्मय ही है।

वेदों के महत्त्व को भिन्न–भिन्न दृष्टियों में इस प्रकार समझ सकते हैं–

2. धार्मिक दृष्टि से महत्त्व

वेदों का सर्वाधिक महत्त्व धार्मिक दृष्टि से है। वेद हिन्दू धर्म के मूल स्रोत हैं। वेदों का आधार लेकर ही समस्त हिन्दुधर्म से सम्बन्धित ग्रन्थों का प्रणयन हुआ है। मनु ने लिखा भी है– 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'[1] अर्थात् वेद सभी धर्मों के मूल हैं। वेद भारतीय ही नहीं बल्कि संसार के सभी धर्मों के आदि स्रोत हैं–

यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः।।[2]

धर्म के जिज्ञासु के लिए वेद परम प्रमाण माना गया है–

'धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः'[3] लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जी ने भी कहा है कि हिन्दु धर्म का लक्षण केवल वेदों को प्रमाण में स्वीकार करना है– प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु।

इसी कारण महाभाष्यकार पतंजलि ने भी कहा है– ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च[4] अर्थात् ब्राह्मणों को कुछ भी कामना न करते हुए छः अङ्गों सहित वेदों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

3. सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्व– सांस्कृतिक तथा सामाजिक दृष्टि से भी वेदों का महत्त्व अपार है। अनेक सामाजिक संस्थाओं के निर्माण तथा नामकरण का श्रेय वेदों को प्राप्त है। मनुस्मृति में कहा है–

सर्वेषां तु स नामानि, कर्माणि च पृथक्–पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवादौ, पृथक् संस्थाश्च निर्ममे।।[5]

वेद ज्ञान का अर्णव है। सामाजिक जीवन, वर्ण व्यवस्था, व्यक्ति का संसार, परिवार का निर्माण, विवाह संस्था, आश्रम व्यवस्था, स्त्रियों की स्थिति, शिक्षा, सामाजिक आचार व्यवहार, स्वजनों के प्रति कर्त्तव्य–भावना, सामयिक दायित्व बोध, निवास, भोजन, पेय, वस्त्र, नागरिकता का दृढ आधारभूमि तथा अन्य सांस्कृतिक एवं सभ्यता विषयक तत्त्वों के उद्गम तथा विकास की जानकारी के लिए वेद श्रेष्ठ ग्रन्थ हैं।

वेदों का सांस्कृतिक महत्त्व इसलिए भी अधिक है, क्योंकि वैदिक संस्कृति सदाचार को जितना महत्त्व प्रदान करती है, उतना अन्य उपादानों को नहीं। व्यक्ति चाहे अद्वैतवादी हो चाहे द्वैतवादी, यदि व्यक्ति सदाचारी नहीं है, तो उसका अद्वैतवादी या द्वैतवादी होना निरर्थक है, वह तो बालू में से तेल निकालने के समान व्यर्थ श्रम है। यदि व्यक्ति सदाचारी है, तो ईश्वर में अविश्वास या विश्वास का प्रश्न उठेगा ही नहीं।

वेद के शब्दों में 'ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः'[6] दुराचारी ऋत (सत्य) के पन्थ को पार कर ही नहीं सकता। सदाचारी व्यक्ति ही 'ऋतपथ' का अनुगामी है और जो ऋतपथ पर चल रहा है वह एक दिन उसे पार कर ही जायेगा तथा प्रभु का सामीप्य ग्रहण कर ही लेगा।

4. ज्योतिष ज्ञान की दृष्टि से महत्त्व

वेद की प्रवृत्ति यज्ञ के सम्पादन के लिए है। यज्ञ का विधान विशिष्ट समयों की अपेक्षा रखता है। यज्ञ–याग के लिए समयशुद्धि की बड़ी आवश्यकता रहती है। इसलिए वैदिक आर्यों का ज्योतिष ज्ञान बहुत श्रेष्ठ था। नक्षत्र, तिथि, पक्ष, मास, ऋतु तथा संवत्सर–काल के समस्त खण्डों के साथ यज्ञ–याग का विधान वेदों में पाया जाता है। जो व्यक्ति ज्योतिष को भली प्रकार से जानता है वही यज्ञ का वास्तविक ज्ञाता है।

5. गणित ज्योतिष– ऋग्वेद तथा यजुर्वेद दोनों में समान रूप से गणित ज्योतिष का विवेचन उपलब्ध होता है। गणित के योग–वियोग का आधार यजुर्वेद के अन्तर्गत निम्नलिखित मन्त्र में द्रष्टव्य है–

एकया च दशभिश्च स्वभूते द्वाभ्यामिष्टये विंशती च।
तिसृभिश्च वहसे त्रिंशता च नियुद्भिर्वायविह ता विमुंच।।[7]

उपर्युक्त मन्त्र में 'विमुंच' शब्द द्वारा वियोग प्रक्रिया स्पष्ट होती है। गुणन–प्रक्रिया के लिए निम्नलिखित मन्त्र प्रस्तुत किया जा सकता है–

''युवां देवात्रयः एकादशासः सत्यस्य ददृशे पुरस्तात्''[8]

अर्थात् (देवां) दिव्य गुणों को वहन करने वाले 11×3त्र33 (सत्याः) सद्गुणों से सम्पन्न है यजुर्वेद के एकमन्त्र 'चतस्रश्च मे' से वर्ग प्रक्रिया पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है जैसे– 2×2त्र4 होता है। वेदों में इकाई, दहाई, सैकड़ा आदि के प्रयोग से योग, वियोगादि का दर्शन उपलब्ध होता है। हमारे वेदज्ञों की संख्या–गणित की अनेक प्रक्रियाएँ पाश्चात्य विद्वानों द्वारा स्वीकार कर ली गई हैं।

6. दार्शनिक दृष्टि से महत्त्व

वेदों की दार्शनिक दृष्टि से भी महत्ता अत्यन्त व्यापक है। वेद ही समस्त भारतीय दर्शन का मूल स्रोत है। भारतीय दर्शन की विभिन्न विचारधाराओं का उद्गम स्थल वेद है। प्रत्येक विचारधारा के प्रमुख सिद्धान्तों का बीज वेदों में विद्यमान है। सभी भारतीय आस्तिक दर्शन तो अपना मूल वेद को स्वीकार करते ही हैं, साथ ही साथ नास्तिक दर्शन भी वैदिक विचारधारा को आधार रूप में ग्रहण करके अपने सिद्धान्तों की विवेचना करते हैं। वैशेषिक दर्शन के अनुसार 'तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्'[9]।

आचार्य वाचस्पति मिश्र का कथन है कि 'महाप्रलय' में नित्य सर्वज्ञ परमेश्वर वेद का प्रणयन कर सृष्टि के आदि में स्वयं ही सम्प्रदायों का प्रवर्तन करते हैं– ''महाप्रलये तु ईश्वरेण वेदान् प्रणीय सृष्ट्यादौ स्वयमेव सम्प्रदायः प्रवर्त्यत ऐवेतिभावः।''[10]

उपनिषदों में समग्र आस्तिक तथा नास्तिक दर्शन के तत्त्वों की बीजरुपेण उपलब्धि होती है। 'यदि नेह नानास्ति किंचन' अद्वैत तत्त्व का बीज रूप से ही सूचक है।

7. साहित्यिक दृष्टि से महत्व

साहित्यिक–सौन्दर्य की दृष्टि से वेदों का अध्ययन अपरिहार्य है। औपम्यगर्भ–अलंकारों के अकृत्रिम रूप, सहज–नाद तथा साम–सौन्दर्य, छन्दों के लयात्मक तथा गत्यात्मक निखार का अनुशीलन वेदों के माध्यम से ही हो सकता है।

वेद के मन्त्रद्रष्टा ऋषियों को कवि की संज्ञा से सम्बोधित किया गया है। इन कवियों ने ब्रह्म की प्राप्ति के लिए ऋचाओं का प्रणयन किया। इस प्रकार कवि की भावमयी वाणी ने बल व तेज का संचार किया जिससे दक्षता तथा कर्मण्यता की प्रेरणा मिलती है। मनुष्य उसे श्रवण कर संकीर्णता का पर्दा फाड़ कर विशालता तथा उदारता में रमण करने लगते हैं। यथा–

''सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः।
सोमः सुतः ऋच्यते पवमानः सोमे अकीः त्रिष्टुभः सं नवन्ते।।''[11]

अर्थात्– ''दुधारु गायें रम्भाती हुई जैसे बछड़े की ओर जाती हैं, वैसे ही विप्र, व्यापक ज्ञान वाले ब्राह्मण अपनी मतियों द्वारा पूँछते हुए, खोज करते हुए, सौम्य कवि के पास जाते हैं। उस समय प्रकट हुआ वेगवान, पवित्र भावों से वर्धमान कवि पूजा जाता है, स्तुति–भाजन बनता है। इस प्रकार त्रिष्टुप् छन्द में बँधे हुए जितने भी स्तुति गान हैं, वे सब काव्यात्मक सौन्दर्य से मण्डित हैं।

8. वैज्ञानिक दृष्टि से महत्त्व

आधुनिक युग में विज्ञान विभिन्न भागों में विभक्त होकर अनेक प्रकार के अन्वेषणों से विश्व के जनमानस को आश्चर्यचकित कर रहा है। उसने पृथ्वी के बाहर तथा भीतर दोनों में छिपे तत्त्वों की खोज की। वेद में चन्द्र, मंगल, शुक्रादि ग्रहों की विशेषताएँ वर्णित है। यथा निम्नलिखित मन्त्र में मंगल का वैशिष्ट्य वर्णित है–

''अग्निर्मूधा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपां रेतांसि जिन्वति।।''[12]

मन्त्र में पूर्णतया स्पष्ट है कि मंगल पृथ्वी का भाग है, आग्नेय है तथा अरुणवर्णी है। विज्ञान द्वारा भी मंगल के सम्बन्ध में यही निष्कर्ष निकाला गया है।

वर्तमान भौतिक शास्त्र की मान्यतानुसार सूर्य यदि हिरण्यगर्भ का जाज्वल्यमान अंश है, तो सूर्य के प्रस्फुटित भागों में शुक्र भी है। निम्नलिखित वेद मन्त्र में भी शुक्र सम्बन्धी अनेक तथ्यों को प्रकट किया गया है–

''अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रिय विपानं शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं प योऽमृतं मधु।''[13]

9. राजनैतिक दृष्टि से महत्त्व

राजनैतिक दृष्टि से भी वेदों का महत्त्व न्यून नहीं है। इस दृष्टिकोण से भी वेद प्रचुर उपयोगिता से युक्त है। वेदों में युद्ध, राज्य–व्यवस्था, सैनिक एवं सेनापति के गुण, सेना की स्थिति तथा व्यूह रचना, शत्रु से बचने के उपाय, विभिन्न शासन प्रणालियों, संस्थाओं तथा सिद्धान्तों का वर्णन उपलब्ध होता है। ऋग्वेद में सभा तथा समिति नामक दो विशिष्ट संस्थाओं का उल्लेख है, जो प्रजातन्त्र की सफलता के लिए आवश्यक है। वेद में सामान्य जनता के द्वारा राजा का चुनाव होना चाहिए, ऐसा कहा गया है–

त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पंच देवीः।
वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रो वि भजा वसूनि।।[14]

उपर्युक्त कथनों से यह सिद्ध है कि आधुनिक समय में वेदों का महत्त्व अत्यधिक है, वस्तुतः वेद परमपिता परमात्मा का प्रदत्त एक अनुपम उपहार है जो हमें जीना सिखाता है, यह एक अनुशासन है जो मैं अधर्म, पाप, अकर्त्तव्य की ओर जाने से हमें रोकता है। आज हमारा देश अनेक प्रकार के समस्याओं से जूझ रहा है, यदि हम वेदों के महत्त्व को जानेंगे, तदनुसार अपने जीवन में आचरण करेंगे तो अनेक समस्याओं का समाधान तो स्वतः ही हो जाएगा।

वस्तुतः वेद अलौकिक है, महान् है, अद्भूत है, अमूल्य–निधि के सदृश है। वेद का प्रत्येक मन्त्र, प्रत्येक ऋचा तथा प्रत्येक पद अपना विशेष महत्त्व रखता है। वेद का प्रत्येक शब्द तपःपूत योनियों और महर्षियों की विमल समाधि में उपलब्ध अनन्त शक्तिमन्त्र है। फलतः सभी मन्त्र रहस्यों से परिपूर्ण हैं।

अतः सभी जनमानस को वेदों की प्रासंगिकता को जानकर वेदों का अध्ययन करना चाहिए, तदनुकूल अपने जीवन में आचरण करना चाहिए, तभी 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' ऋषियों का लक्ष्य पूरा हो पाएगा।

10. सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मनुस्मृति 2/6
2. मनुस्मृति 2/7
3. मनुस्मृति 2/13
4. महाभाष्य– पस्पशाह्निक
5. मनुस्मृति 1/21
6. वैदिक वाङ्मय में राष्ट्रीय एकता एवम् अखण्डता– डॉ. अन्नपूर्णा मिश्रा, पृष्ठ 59

7. यजु. 27/33
8. ऋ. 10/57.2
9. वैशेषिक सूत्र 1/1/3
10. न्यायवार्तिक तात्पर्यटीका
11. वैदिक वाङ्मय में राष्ट्रीय एकता एवम् अखण्डता, डॉ. अन्नपूर्णा मिश्रा, पृष्ठ 61
12. यजु. 19/75
13. यजु. 19/75
14. अथर्ववेद 3/4/2